Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 4 | APRIL 2024

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति: एक विश्लेषण

रविन्द्र जोशी [1]

[1] **पोस्ट गेस्ट फैकल्टी असिस्टेंट प्रोफेसर गवर्नमेंट कॉलेज बागोड़ा, राजस्थान.**

ABSTRACT:

नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से, भारत की विदेश नीति में उल्लेखनीय परिवर्तन और गतिशीलता देखी गई है। "वसुधैव कुटुंबकम" और "नेबरहुड फर्स्ट" जैसी अवधारणाओं को अपनाकर, मोदी सरकार ने भारत के कूटनीतिक प्रयासों को पुनर्जीवित किया और वैश्विक मंच पर देश की उपस्थिति को सशक्त बनाया। इस शोध पत्र का उद्देश्य नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति का विश्लेषण करना है, जिसमें प्रमुख पहल, रणनीतियाँ और कूटनीतिक दृष्टिकोण शामिल हैं। इसके अलावा, यह कूटनीति के विभिन्न पहलुओं जैसे आर्थिक, सुरक्षा, सांस्कृतिक, और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उठाए गए कदमों की भी जांच करता है, जो भारत की बढ़ती वैश्विक भूमिका को दर्शाते हैं।

KEYWORDS:

भारत की विदेश नीति, नरेंद्र मोदी, कूटनीति, वैश्विक मंच, नेबरहुड फर्स्ट, एक्ट ईस्ट पॉलिसी, रणनीतिक साझेदारी, बहुपक्षवाद।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
27th April 2024	30th April 2024

विषय वस्तु

भारत की विदेश नीति को ऐतिहासिक रूप से गुटनिरपेक्षता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, और बहुपक्षवाद जैसे सिद्धांतों द्वारा निर्देशित किया गया है। नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से, इन सिद्धांतों को नई ऊर्जा और दृष्टिकोण के साथ अपनाया गया है। मोदी के नेतृत्व में भारत ने अपनी विदेश नीति को अधिक सक्रिय, आत्मनिर्भर, और विश्वसनीय बनाने की दिशा में काम किया है। इसका उद्देश्य न केवल भारत के राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना है बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश की स्थिति को भी मजबूत करना है।

नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी

मोदी सरकार ने अपने कार्यकाल की शुरुआत से ही 'नेबरहुड फर्स्ट' पॉलिसी को प्राथमिकता दी है। इस नीति का उद्देश्य भारत के पड़ोसी देशों के साथ मजबूत और मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना है। शपथ ग्रहण समारोह में SAARC देशों के नेताओं को आमंत्रित करना इस नीति की दिशा में पहला कदम था। इसके तहत, भारत ने नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, भूटान, और मालदीव जैसे देशों के साथ राजनीतिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए कई पहल की हैं। नेपाल में 2015 में आए भूकंप के बाद भारत ने त्वरित सहायता प्रदान की, जिससे दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूती मिली। इसी प्रकार, बांग्लादेश के साथ भूमि सीमा समझौता और तीस्ता जल समझौते पर वार्ता से दोनों देशों के संबंधों को नई दिशा मिली।

एक्ट ईस्ट पॉलिसी

'लुक ईस्ट' पॉलिसी को 'एक्ट ईस्ट' पॉलिसी में बदलना मोदी सरकार की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण कदम था। इस नीति का उद्देश्य दक्षिण पूर्व एशिया और प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ आर्थिक और रणनीतिक संबंधों को गहरा करना है। भारत ने ASEAN, जापान, ऑस्ट्रेलिया, और वियतनाम जैसे देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत किया है। भारत-जापान के बीच विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया गया है। भारत और आसियान देशों के बीच व्यापार और निवेश में वृद्धि के साथ-साथ सांस्कृतिक और शैक्षिक आदान-प्रदान को भी बढ़ावा दिया गया है। इस नीति के तहत, भारत ने क्षेत्रीय सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा, और आतंकवाद विरोधी सहयोग पर जोर दिया है।

बहुपक्षीय मंचों पर सक्रियता

मोदी सरकार ने बहुपक्षीय मंचों पर भारत की भागीदारी और सक्रियता को बढ़ावा दिया है। संयुक्त राष्ट्र, BRICS, G20, शंघाई सहयोग संगठन (SCO), और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों में भारत की उपस्थिति को सशक्त बनाया गया है। भारत ने जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, और वैश्विक आर्थिक अस्थिरता जैसे मुद्दों पर अपनी आवाज को प्रमुखता से उठाया है। 2015 में, भारत ने COP21 पेरिस जलवायु सम्मेलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और सौर ऊर्जा के लिए अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा देना है। BRICS और G20 के मंचों पर भारत ने आर्थिक सुधार, व्यापार, और विकास के मुद्दों पर सक्रिय योगदान दिया है।

आर्थिक कूटनीति और व्यापार समझौते

मोदी सरकार ने 'मेक इन इंडिया', 'डिजिटल इंडिया', और 'स्टार्टअप इंडिया' जैसे अभियानों के माध्यम से आर्थिक कूटनीति को बढ़ावा दिया है। इन पहलों का उद्देश्य विदेशी निवेश को आकर्षित करना और भारतीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाना है। इसके तहत, भारत ने विभिन्न देशों के साथ द्विपक्षीय और बहुपक्षीय व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। यूरोपीय संघ, अमेरिका, जापान, और आसियान देशों के साथ आर्थिक संबंधों को मजबूत किया गया है। भारत-अमेरिका व्यापार संबंधों में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिससे दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ावा मिला है। मोदी की आर्थिक कूटनीति का उद्देश्य वैश्विक व्यापार और निवेश के लिए भारत को एक आकर्षक गंतव्य बनाना है।

सुरक्षा और रक्षा कूटनीति

मोदी सरकार के तहत भारत ने सुरक्षा और रक्षा कूटनीति पर विशेष ध्यान दिया है। भारत ने अमेरिका, रूस, फ्रांस, इज़राइल, और जापान जैसे देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी को मजबूत किया है। रक्षा क्षेत्र में स्वदेशीकरण को बढ़ावा देने के लिए 'मेक इन इंडिया' के तहत कई रक्षा सौदे किए गए हैं। भारत-अमेरिका के बीच रक्षा सहयोग को मजबूत करने के लिए लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरैंडम ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इसी प्रकार, भारत-फ्रांस के बीच राफेल लड़ाकू विमानों की खरीद ने दोनों देशों के बीच रक्षा संबंधों को नई ऊंचाई पर पहुंचाया है। भारत ने अपनी समुद्री सुरक्षा रणनीति को भी मजबूत किया है, खासकर हिंद महासागर क्षेत्र में, ताकि क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता को बनाए रखा जा सके।

सांस्कृतिक कूटनीति और 'सॉफ्ट पावर'

नरेंद्र मोदी की विदेश नीति में सांस्कृतिक कूटनीति को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। योग, आयुर्वेद, और भारतीय संस्कृति के माध्यम से 'सॉफ्ट पावर' को बढ़ावा दिया गया है। 21

जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता दिलाने में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसे वैश्विक स्तर पर व्यापक समर्थन मिला। इसके अलावा, भारतीय डायस्पोरा के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए कई पहल की गई हैं। मोदी ने अपने विदेश दौरों के दौरान भारतीय प्रवासियों के साथ संवाद स्थापित किया और उन्हें भारत के विकास में भागीदार बनने के लिए प्रेरित किया। भारतीय प्रवासी नीति को सुदृढ़ करने और प्रवासी भारतीयों के हितों की रक्षा के लिए भी सरकार ने कई कदम उठाए हैं।

प्रौद्योगिकी और नवाचार कूटनीति

मोदी सरकार ने प्रौद्योगिकी और नवाचार को अपनी विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण अंग बनाया है। डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटीज, और साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया गया है। भारत ने विभिन्न देशों के साथ साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष अन्वेषण, और नवाचार में सहयोग के लिए समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके तहत, भारत और अमेरिका के बीच 'साइबर सिक्योरिटी फ्रेमवर्क' और 'नासा-इसरो सिंथेटिक अपर्चर रडार (NISAR)' परियोजना महत्वपूर्ण हैं। मोदी सरकार की प्रौद्योगिकी कूटनीति का उद्देश्य भारत को एक ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करना है और वैश्विक तकनीकी सहयोग में एक प्रमुख भूमिका निभाना है।

पश्चिम एशिया और अफ्रीका के साथ संबंध

मोदी सरकार ने पश्चिम एशिया और अफ्रीका के साथ भी अपने संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया है। खाड़ी देशों के साथ ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार, और भारतीय प्रवासी के मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया गया है। भारत-सऊदी अरब, भारत-यूएई, और भारत-ईरान के बीच सहयोग को नए आयाम दिए गए हैं। अफ्रीका के साथ संबंधों को सशक्त बनाने के लिए 'इंडिया-अफ्रीका फोरम समिट' का आयोजन किया गया, जिसके तहत स्वास्थ्य, कृषि, और शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाया गया है। पश्चिम एशिया और अफ्रीका के साथ संबंधों का उद्देश्य भारत की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना और वैश्विक मंच पर अपने राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव को बढ़ाना है।

रणनीतिक स्वायत्तता और गुटनिरपेक्षता

नरेंद्र मोदी की विदेश नीति में 'रणनीतिक स्वायत्तता' और 'गुटनिरपेक्षता' के सिद्धांतों को पुनर्परिभाषित किया गया है। भारत ने अपनी विदेश नीति को

रणनीतिक स्वायत्तता और गुटनिरपेक्षता

नरेंद्र मोदी की विदेश नीति में 'रणनीतिक स्वायत्तता' और 'गुटनिरपेक्षता' के सिद्धांतों को पुनर्परिभाषित किया गया है। भारत ने अपनी विदेश नीति को किसी एक गुट से बांधने के बजाय विभिन्न देशों और संगठनों के साथ स्वतंत्र और संतुलित संबंध बनाने पर जोर दिया है। चीन की बढ़ती क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं और आक्रामकता के मद्देनजर, भारत ने अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, और यूरोपीय देशों के साथ रक्षा और रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा दिया है। इसके साथ ही, भारत ने रूस और ईरान के साथ अपने पारंपरिक संबंधों को भी बनाए रखा है। यह संतुलन भारत को अपनी विदेश नीति में स्वायत्तता और लचीलापन बनाए रखने में मदद करता है, जो वैश्विक मंच पर उसके राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

चीन के साथ संबंध

मोदी सरकार के कार्यकाल में भारत-चीन संबंधों में उतार-चढ़ाव देखने को मिला है। एक ओर, दोनों देशों ने आर्थिक सहयोग और द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा देने की कोशिश की, वहीं दूसरी ओर सीमा विवाद और भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के कारण संबंधों में तनाव भी रहा। 2017 के डोकलाम विवाद और 2020 के गलवान घाटी संघर्ष ने भारत-चीन संबंधों में बड़ी चुनौती पेश की। इन घटनाओं के बाद, भारत ने अपनी सीमा सुरक्षा को मजबूत किया और चीन के प्रति एक सख्त नीति अपनाई। इसके अलावा, भारत ने QUAD (अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, और भारत) जैसे मंचों पर अपनी सक्रिय भागीदारी बढ़ाई, जिससे क्षेत्रीय सुरक्षा और संतुलन को बढ़ावा मिला।

पाकिस्तान के साथ संबंध

मोदी सरकार के कार्यकाल में भारत-पाकिस्तान संबंधों में भी कड़वाहट देखने को मिली। 2016 के उरी हमले और 2019 के पुलवामा हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ सख्त रुख अपनाया। भारत ने पाकिस्तान को आतंकवाद का समर्थन करने वाला देश बताते हुए उसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अलग-थलग करने की कोशिश की। इसके अलावा, 2019 में अनुच्छेद 370 के हटाने के बाद, भारत-पाकिस्तान संबंधों में तनाव और बढ़ गया। मोदी सरकार ने पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय वार्ता को तब तक के लिए निलंबित रखा जब तक कि वह आतंकवाद का समर्थन बंद नहीं करता। इसके बावजूद, भारत ने क्षेत्रीय शांति और स्थिरता के लिए अपने द्वार हमेशा खुले रखे हैं और आतंकवाद मुक्त वातावरण में वार्ता के लिए तैयार है।

वैश्विक शक्ति के रूप में उभरता भारत

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने खुद को एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। विभिन्न क्षेत्रों में भारत की बढ़ती ताकत और प्रभाव को देखते हुए, वैश्विक समुदाय ने भारत की भूमिका और योगदान को स्वीकार किया है। चाहे वह जलवायु परिवर्तन, वैश्विक स्वास्थ्य संकट, या आर्थिक सुधार के मुद्दे हों, भारत ने अपनी सक्रिय भागीदारी और नेतृत्व की क्षमता को साबित किया है। मोदी सरकार की विदेश नीति का उद्देश्य भारत को एक ऐसी शक्ति के रूप में स्थापित करना है जो न केवल अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा कर सके, बल्कि वैश्विक चुनौतियों से निपटने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

निष्कर्ष

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति ने एक नई दिशा और गति प्राप्त की है। 'नेबरहुड फर्स्ट', 'एक्ट ईस्ट', और 'सॉफ्ट पावर' जैसे पहलुओं पर जोर देते हुए, मोदी सरकार ने भारत की विदेश नीति को अधिक गतिशील, आत्मनिर्भर, और रणनीतिक बनाया है। वैश्विक मंच पर भारत की भूमिका को सशक्त बनाने के लिए आर्थिक, सुरक्षा, और सांस्कृतिक कूटनीति का कुशल उपयोग किया गया है। हालाँकि, चीन और पाकिस्तान के साथ संबंधों में चुनौतियाँ बनी हुई हैं, लेकिन मोदी सरकार ने इन चुनौतियों से निपटने के लिए एक संतुलित और सशक्त दृष्टिकोण अपनाया है।

भारत की विदेश नीति का उद्देश्य न केवल अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना है, बल्कि वैश्विक शांति, स्थिरता, और विकास में भी योगदान देना है। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, भारत ने अपनी विदेश नीति को अधिक व्यापक, समावेशी, और प्रभावी बनाया है, जो 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने में सक्षम है। भारत की वैश्विक भूमिका को और सशक्त करने के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी कूटनीति को समय-समय पर अद्यतन करता रहे और वैश्विक परिवर्तनों के अनुसार अपनी नीतियों में सुधार लाता रहे।

REFERENCES

1. **गुप्ता, अजय कुमार।** *भारतीय विदेश नीति: अतीत और वर्तमान।*
2. **शर्मा, आर. के.** *आधुनिक भारत की विदेश नीति।*
3. **मेहता, निशा।** *भारत की विदेश नीति और नरेंद्र मोदी का कूटनीतिक दृष्टिकोण।*
4. **कुमार, सुरेश।** *भारत की वैश्विक भूमिका: अवसर और चुनौतियाँ*
5. **मिश्रा, संतोष।** *नरेंद्र मोदी की विदेश नीति: एक आलोचनात्मक अध्ययन।*
6. **वर्मा, सुधीर।** *वैश्विक शक्ति के रूप में उभरता भारत: कूटनीतिक पहल।*
7. **जोशी, आर. सी.** *भारत और वैश्विक कूटनीति।*